‘आगम’ शब्द विमर्श

स्व. हरिशंकर एजुकेसी

‘आगम’ शब्द का प्रयोग जीनालॉजी में ही नहीं शीघ्र, योग, साहित्य, धार्मिक आदि दर्शनों में भी हुआ है। आज जननी जो ‘आगम’ प्रमाण बनाने की परम्परा तथापि सबसे महत्त्वपूर्ण दर्शनों में रहे हैं: किन्तु, ‘आगम’ शब्द को प्रसिद्धि शीघ्र एवं जीन दर्शनों में विशेष हुई है। जीनालॉजी एवं जीनालॉजी सबसे प्रभावकारी है। डॉ. हरिशंकर एजुकेसी ने तत्त्वसाध्य (स्पेशलिस्ट), दर्शनशील, संस्कृतिकर्मक एवं व्याकरण में ‘आगम’ की संरचना करने के अनुसार इस आधोस्त में जीन दर्शन समान ‘आगम’ शब्द का विवेचन किया है।

—सम्पादक

प्राणीगण के ही भारत ज्ञान के श्रेष्ठ में ‘विशेषगुण’ के रूप में प्रसिद्ध है। जब संसार अज्ञान के अंधतम में आक्षेप था, तब भारतीय ज्ञानाश्रय में ज्ञान का भास्कर भास्कर विद्वान होता था। ध्यान, निजीति एवं भगवान पुरुष ध्यान, साधना और समाधि के द्वारा तत्त्व का, यथार्थता का, परम का साक्षरता करते थे। उस परम में समाधियों के लिए, एकत्रीकरण होकर आनंद सागर में निम्नलिखित होते रहते थे। आनंद सागर में निम्नलिखित ही उनके जीवन का स्वार्थय एवं परम प्रयोजन के रूप में अभिव्यक्त होता था।

परम का साक्षरता, तत्त्व की उपलब्धि एवं सत्य का ज्ञान कर जब यथार्थ तत्त्व की समाधि से उपलब्ध होते थे, तो अपने ज्ञान को लोकमंडल एवं विश्व कल्याण के लिए प्रभावित, वित्तवर्धन एवं संसारी शिक्षाओं के द्वारा उसने प्रतिपादित किये थे। गुरु से सुनकर शिष्य परमस्थित न को प्राप्त करते थे, इसलिए उसे अभिव्यक्ति कहा जाने लगा। गुरु और शिष्य की परस्पर से अभिव्यक्ति एवं यथार्थता के द्वारा उसे ही आगम शब्द से अभिव्यक्त किया गया।

‘आगम’ शब्द की ध्युति—‘आइ’ उपसर्ग ‘पूर्वक’ ‘गम्य’ गति’ द्वारा से गति प्राप्त करने से ‘आगम’ शब्द निर्माण होता है। ‘आइ’ उपसर्ग का प्रयोग हंसु, अभिव्यक्ति अद्यतन अर्थों में होता है। ‘आइ’ उपसर्ग के साथ ‘अत सत्य गमने’ धारा से बाहुलकार्य अद्य प्रत्युक्त करने पर भी बनता है। अग्रिमोशकर ने तिन अर्थों में ‘आइ’ का निर्देश किया है—आयीयस्थिन, गतिविधि, सीमावर्त्ती धातुकोषज। गुरु धातु गतिविधि है जो गतिविधि है थे धातुए prevalent अध्यात्मिक होती है—‘ये गतिविधि: तो आनन्दक अधि शक्ति।’ इस व्यापार से गुरु धातु ज्ञानदीप्ति भी माना जाएगा। जो मनुष्य ज्ञान में गन्न करे, सत्यत ज्ञान में लीन है या जो ज्ञान का आधार (साधन) है, उसे आगम कहा जाएगा।

‘आइ’ का प्रयोग प्राणिनि ने मर्यादा और अभिव्यक्ति अर्थों में किया है। जिस ज्ञान को समय का रूप से प्राप्त किया जाए तो ज्ञान मर्यादापूर्वक गुरु—शिष्य परस्पर से आ रहा है, उसे ‘आगम’ कहते हैं। जिसकी परम्परा
70 जिनवाणी- जैनागम-सहिष्नु विशेषांक

मर्यादापूर्वक चलाती आ रही है या जो ज्ञान मर्यादापूर्वक प्राप्त किया जाता है, वह आगम है। आवश्यक नियुक्तिकार ने किया है—‘आद्भुतिविवेचनयाय अभिविविधा मर्यादावा वा गमन परिवर्तन आगम:’।

‘गमन’ शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में देखा जाता है। अनुसरणों ने इसे प्रस्ताव के प्रयोग माना है—वायुः प्रवृत्तिमिवेचनयाय प्रस्तावन गमन गमन:। जहाँ दृश्यांक विवेचनयाय प्रस्तावन है, अनन्त यात्रा का समयों नियम उपस्थित है वा जिसमें अनन्त की ओर प्रस्ताव करने के समयक संसारों का निर्देश है, उसे आगम कहते हैं।

‘आगम’ शब्द का प्रयोग जैन एवं जैनतार परम्पराओं में उपलब्ध है। प्रथम दृष्ट्या जैनतम परम्परा में आगम शब्द विद्यानीय है।

जैनतम परम्परा में आगम

1.1 तत्ववादसम्य में आगम-आगमों की परम्परा अनादिकालीन है। रूपमी तंत्र (उपदेशात, पृ.१) में निर्देश है कि अत्यादिकाल से गुम-शिखर परम्परा से जो आगम शास्त्र संसर्ग है, वह आगम है। ‘आगम’ शब्द के मूल में परम्परा ध्याति की प्रशान्त है। आपि इसलिए आपि कहा जाता है, क्योंकि वह परम्परा प्राप्त पृथ्वी कालवर्षानु उन्मिन वस्तु तथा क्रम विवेचन का रूप बने क्रम करता है। प्राचीन अध्ययन निरुक्ति की परम्परा ही आगम है, जो विशिष्ट वाक्य रचनाओं के रूप में निबन्ध तथा महाविद्याओं के अनुसार में, क्योंकि अनवरत रूप से देखी जा सकती है। स्वच्छन्द तंत्र में आगम लक्षण का निर्देश है—

अद्वितियात्मक आद्वितिकाले परमकालात्मक।
ध्वनिरूपः विनिशिक्षात शास्त्र परमकालात्मक।
अनुरूपः गणनाशििविनिशिक्षात जातक सहसृ।
शास्त्रविक्षेपः तत्तत्त्वविक्षेपः शास्त्रविक्षेपः।

अर्थित्तू अद्वितितत निरभ्र, अमृत, गणनात्मक सांविक्ष्यात जगातु के परमकारण जातमय शिव तै समुस्तम र्मतर्लि प्रारूप शास्त्र आगम है।

इसी तरह का उद्यामात्व तंत्र में भी निर्देश मिलता है—
आगम नितिविवेचनयाय नितिविवेचनयाय
गणनात्मक उद्यामात्व तत्तत्त्वविक्षेपः वहृत्व।
अर्थित्तू परम शिव के मुख से उत्पत्ति एवं गिरिजामुख से आगम झाँका को आगम कहते हैं।

स्वच्छन्द-दोषों में कथित है कि ‘आ सम-ताव गमनया अपेक्षने विमृष्टि परिगम स्वरूप अर्थित्तू कृत्य पराशिकिते आगमः व्यक्तिप्रतिके शब्दसंसर्गः तदः प्राप्तिविवेचनयाय शास्त्रविवेचनयाय।’
अर्थतः परमेश्वर के रूप का अभेद रूप में विमा संन वरीय सरस्वति हो आगम है और उस तत्त्व का प्रतिपादक शाब्द संदर्भ भी आगम है। जिसके हीन में जिस सिद्धांत की मिलती हो गयी, उसके लिए वही आगम है।

- दुःखदिश्यरूप-शाब्द आगम, जो समस्तात् अर्थ गम्यतीति।

यहाँ तब में आगम का लक्षण निम्न रूप से निर्देश हैं—

- सुदिश्य प्रतिपादक देवताकार् बधोकार्यम्।
- साधनां वैव सर्वोऽऽुरद्वारकायययोऽपि।
- श्रुत्कर्म शाधनानां वैव ध्यायोऽग्रवश्चुविवधः।
- समानिवक्ष्येऽऽक्षमाम् तत्त्वदुःऽऽुधः।

अर्थात् जिसमे नाति विषय प्रतिपादित हो, उसे आगम कहते है। दे सत्त सिद्ध हैं—

1. स्वरूप- जानकारण, उपदान और उल्लास का जर्मन,
2. प्रत्यय निरूपण,
3. देवताओं की आर्यता,
4. सर्वसाधन प्रकार वर्गन—विविध सिद्धियों के साधन का प्रकार निर्देश
5. पुरुषलाल क्रमवर्ण्य-पोहन, उच्चारण आदि विषयों का वर्णन,
6. प्रत्यक्ष निरूपण- शारीर, वशीकरण, स्तम्भन, विदेश्य, उच्चारण, मारण
आदि का साधन विशेष।

7. ध्यान योग- आर्यता के ध्यान के निमित्त योग-प्रक्रिया का वर्णन।

1.2 योगदर्शन और आगम— योगदर्शन में स्वीकृत तीन प्रमाणों में आगम तीनों प्रमाण के रूप में स्वीकृत है—

प्रत्यक्षानुभावन्यामासः प्रमाणानि (योगसूत्र 1.7) पर ज्यास्य भाषा में आप के द्वारा दृष्ट अर्थ को आगम कहा गया है— आपके दृष्टोऽऽुमधुमितो वार्ष: परश्र
स्वविधानकाले या भान् नेतमवदियषयोऽऽुधः।

अर्थात् आपके पुरुष के द्वारा दृष्ट या अनुमित (प्रत्यक्षानुभाव, साधनवात्) अर्थ का दूसरे के अववाव के लिए शादिक उपदेश आगम है।

वाच्यपदार्थकृत्त ततवैश्यार्थी के अनुसार—

तत्वदर्शनकार्याविधिमाहसंवधान आत्म करके वर्तमानी इत्यादितत्त्व
दृष्टोऽऽुमितो वार्ष: आचार्यतविभानसृद्धम् ज्ञानस्य श्रेयौऽऽुमिते समुच्चादः।

अर्थात् तत्वदर्शन एवं कार्याविधि से संबंधित आप के दृष्टि दृष्टि अनुमित अर्थ आगम होता है, जिससे शोधों के विच में आपस्कृत ज्ञान का समुपाद होता है।

साधनशील सत्तात् ‘पातलज्ञल सत्तम् के अनुसार तत्
साधनशीलत्वं व दृष्टोऽऽुमितिमाहाः व्याप्तत्।

अर्थात् सर्वतीत् अर्थत् परस्पर्ये भे अपात पुरुष के द्वारा दृष्टि अर्थवा
अनुमित अर्थों से जो ज्ञान होता है वह आगम है।
विज्ञान भिक्षु ने ‘दीर्घवाचिति’ में आगम का लक्षण इस प्रकार दिया है—

आधोगैति। भगवान माधव मिश्र महामहाराज रामदेव को तथाकथा मूलविभाग स्वतंत्रता प्राप्त होती निर्मिति करता है। आज्ञादानकारक वृद्धित्यागम करती है।

अर्थात् भ्रम, प्रयास, उलटक लिखता, अनुमानक दोषों में रहित आत्म तुषा के अभाव से आगम करते हैं। आत्म पुरुष से आगम स्वरूप या प्रभाव आगम है। आगममूलक प्रभाव भी आगम स्वरूप से व्यवहार होते हैं।

भोजपुर्ति में कालित है— आपातवचन आगम।

1.3 सांख्यदर्शन में आगम—सांख्य दर्शन में नीच प्रमाण स्विकृत है— प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्दप्रमाण। शब्द प्रमाण ही आगम है। सांख्यसूत्र में निर्दिष्ठ है—

आश्रयरकेश: शब्द।

आचार पुरुषों के द्वारा कालित या प्ररूपित शब्द प्रमाण है। सांख्यकारिका के अनुसार यथार्थ वाच्य जन्य ज्ञान शब्द प्रमाण है—

अपाशुर्विशालवचन तु।

इसलिए आचार्यों के वचन एवं विवेचन को आदर्शवचन कहा गया है।

क्योंकि इनसे साश्चार्थ अथवा यथार्थ की उपलब्ध होती है। (द्रष्टव्य भ्रमज्ञान:) माधवसूत्रकार ने आगम के रूपमें को उद्देश्यित करने के लिए भगवान कपिल के वचन को उद्धृत किया है—

आगमो आपातवचनमां दोषमहो विदुः।

स्त्रीणंतथा काल न भूषणत्वसमहाय।

वदनष्ठवन्ययुक्तो यो सर्वदेशविविज्ञः।

रूपेणसत्तविशिष्टस्य ता वदुः करणम्॥

अर्थात् आपातवचन को आगम कहते हैं। इसमें से जो शृंगार हो उसको आत्म कहते हैं, क्योकि दोषों स्वरूप व्यक्ति हृदा नहीं बोले सकता। जो अपने कर्ममें तत्त्व हो, या देश रहित हो। ऐसे ही लोगों से समनान्त हो उसे आत्म कहते हैं।

सांख्यतत्वसूत्रमें ज्ञात्वत्सिद्धिनिः निकाह है— आपात प्राप्त युवकों शास्त्री। आपात प्राप्त युवकों शास्त्री। आपात प्राप्त युवकों शास्त्री।

अर्थात् सांख्यतत्वसूत्रमें, यथार्थ के प्रहणकारी तथा उपदेशक को आत्म कहते हैं, उन्हें का वचन आपातवचन है। शृंगार आपत्ति आपत्ति वचन है।

सांख्यतत्व यथार्थश्रीनिवेदन में शब्द (आगम) प्रमाण की व्याख्या की गई है।

1. आपातवचनज्ञानां शब्द: प्रमाण तत्करण शब्दप्रमाणमित्वांकं लक्षणम्।
2. आपातवचनज्ञानां पदार्थसांसर्गाकारां तत्करणवृद्धितिः हितीय शब्दप्रमाणम्।
3. आपस्तु स्वर्गमत्वार्हजीतो रामदेवरसहितो ज्ञानवान शीतलसम्बन्धः। हस्तू जानीयोकुलेश्वरामत्वाद्यक्षम्। सवस्तो व्याकुलमयूतस्याब्धेऽपूर्वस्य इत्येव। अर्थानुजानवान्, शीतल सम्बन्धः। रामदेव रहित पुरुष अप्त कहलाता है, उसके वचन को आप-वचन अथवा आगम (स्वास्तिक) प्रमाण कहते हैं।

1.4 न्यायदर्शन में आगम-न्यायदर्शन में चार प्रमाणों को स्वीकृत किया गया है— प्रत्येक, अनुमान, उपमान और शब्दप्रमाण। शब्दप्रमाण रूप व्याख्यात ज्ञान के साधन को ज्ञान कहते हैं। इसी का उपयोग वह कहते हैं। न्यायसूत्रदर्शन गांधार ने आलोचनात्मक वचन को शब्द प्रमाण माना है— आपस्तु स्वर्गमत्वार्हजीतो ज्ञानवान शीतलसम्बन्धः।

परन्तु आचार्यों ने किवीत परिवर्तन के साथ इसकी परिभाषा दी है— आपस्तु स्वर्गमत्वार्हजीतो ज्ञानवान शीतलसम्बन्धः। अर्थानुजानवान्, शीतल सम्बन्धः। बारस्तरसन में न्यायाभाषा में साधनावृत्तया यथा का साधारण करने वाले व्यक्ति को आप कहते हैं, वहाँ हस्तमभूतक्तवात्तु तत्त्वज्ञान का साधारण करता है। व्याख्या व्यक्ति है, रागांत्रिक से शुरु है तथा निरंजन अन्वेषण वाला है वह आप है।

जैन परम्परा में आगम का स्वरूप

दिगम्बर एवं शेतायम्बर साहित्य में आगम को अनेक परिभाषाएं मिलती हैं। अर्थानुजानवान्, शीतलसम्बन्धः। अर्थानुजानवान्, शीतल सम्बन्धः। यदि प्राप्त परिभाषाओं को निर्देशान्वित संस्कृत में रख सकते हैं—

1. आगम तीर्थकर वाणी है— नियमसम्पादित में यह तथ्य निर्देश है कि जो तीर्थकर के मुख से सनुकियुत है वह आगम है।

तस्म मुहृदव्यं घुष्माऴथरसदसविरहेय हुष्माण्।
आपमिद्धि परिवर्तिक तेन दु कहिया हव तत्त्वत्ता। ॥
अन्यत्र भी प्रमाण मिलते हैं—

आगमस्तु ज्ञानवान शीतलसम्बन्धः।
अर्थानुजानवान्, शीतलसम्बन्धः। विनिर्देशान्वित समूचे वस्तुओं के विनिर्देश के समर्थन में तक पर चतुर वचन को आगम कहते हैं।

2. आगम तीर्थकर वाणी है— शेतायम्बरायुक्त रहित पुरुषों के द्वारा प्रकटक होता वचन आगम है— आपमिद्धि परिवर्तिक तेन दु कहिया हव तत्त्वत्ता। ॥

पंचासिकायाय तारायुक्तलिङ्गायुक्तायुक्ततस्यानववाहायुक्तायुक्तसंविद्याधिकारिः दशानववाहायुक्तायुक्तसंविद्याधिकारिः दशानववाहायुक्तसंविद्याधिकारिः दशानववाहायुक्तसंविद्याधिकारिः दशानववाहायुक्तसंविद्याधिकारिः दशानववाहायुक्तसंविद्याधिकारिः दशानववाहायुक्तसंविद्याधिकारिः
}

अर्थानुजानवान्, शेतायम्बरायुक्तायुक्तसंविद्याधिकारिः दशानववाहायुक्तसंविद्याधिकारिः दशानववाहायुक्तसंविद्याधिकारिः दशानववाहायुक्तसंविद्याधिकारिः दशानववाहायुक्तसंविद्याधिकारिः दशानववाहायुक्तसंविद्याधिकारिः दशानववाहायुक्तसंविद्याधिकारिः

d"
3. आगम सर्वज्ञ प्रमीत है— आगम: सर्वज्ञ निरस्तरागदेशण प्रमीत: 

dharmyopayatmakasya vyaknak: "अर्थात् सर्वज्ञ जिसके निरस्त हो गए हैं। वैसे सर्वज्ञ के द्वारा प्रमीत आगम है, जो प्रात्मव एवं प्रात्मके साधनों का निरुपक होता है।

4. आगम आपत्वचन है—आपत्पुरुषों को क्षणी आगम है, इसके अनेक प्रभाव 

01. अर्थस्य वा वचनान्यामोऽन्याय अथात् आपत्ति आपत्वचनान्यामक वनना है।

02. आपत्वचनान्यामक तथा वत्सकादिवर्तमानम्।

03. आपत्वारुपात्मकम्। अथात् आपत्वचनान्यामप्रणीति है।

04. आपत्वारुपात्मकम्। अर्थात्ः आपत्व वाला व्याख्या आपत्वचन है।

05. आपत्वारुपात्मकम्। अर्थात् आपत्व आपत्वचन से जो अर्थ 

06. आपत्वारुपात्मकम्। अर्थात् आपत्व वाला उपलब्ध अर्थ 

07. आपत्वारुपात्मकम्। अर्थात् आपत्वचन से जो अर्थ आपत्वअर्थस्य स्वरूपम्।। वह आगम है। गीता रूप से आपत्वचन ही आगम है।

08. अर्थात् अस्वरूपात्मकम्। अर्थात् अर्थात् अस्वरूपात्मकम् 

09. आपत्व वाला व्याख्या आपत्वचन आपत्व आगम है।

5. गुरु परम्परा से प्राप्त ज्ञान-विज्ञान आगम है

01. आचार्यप्रज्ञेयांगममाणित्यायम्। अर्थात् जो आचार्य—परम्परा, गुरु—शिष्य परम्परा से प्राप्त होता है वह आगम है।

02. गुरुपरम्परांगममाणित्यायम्। अर्थात् जो गुरु परम्परा से आता है वह आगम है।

03. तदुपदिष्टं बुद्धहितिशय्योक्तं-गण्धर्वशास्त्रिक भूतम्। अर्थात् 

04. आचार्यप्रज्ञेयांगममाणित्यायम्। अर्थात् जो तत्त्व
6. पूर्वपिरुच्चरित्य आगम है

01. पूर्वपिरुच्चरित्य आगम: अर्थात् पूर्वपिरुच्छरित्य दोषों से जो सहाय कायम है वह आगम है।

02. पूर्वपिरुच्छरित्य दोषों से सहाय कायम है अर्थात् पूर्वपिरुच्छरित्य दोषकाल व शास्त्रीय संस्कार योग आचार्यों एवं नवरत्नों को आगम कहते हैं।

03. पूर्वपिरुच्छरित्य प्रविधि पूर्वपिरुच्छरित्य प्रविधि दोषसंयूर्त यथा योग कहते हैं।

04. पूर्वपिरुच्छरित्य प्रविधि धर्मदान अर्थात् पूर्वपिरुच्छरित्य एवं प्रविधि धर्मदान अर्थात् पूर्वपिरुच्छरित्य एवं प्रविधि कहते हैं।

7. हेमेयोपाध्याय का प्रमुख है आगम- संबंध जीवन के विकास के लिए या जीवन के उत्क्रम के लिए कौन-कौनसी वस्तुएं त्याज्य हैं और कौनसी प्राप्त है, इसका निरुक्त आगम में किया जाता है।

01. हेमेयोपाध्याय दूर चर्चा संबंध आगम धर्मः

(रमयोचक्य, गोवदनबुरूख्त)
है और उपाध्य पूर्व के द्वार वर्ग का समाख्यास्त्र कर तीनों कालों में विद्यमान पदार्थों का जो निरुक्तकरण करता है वह आगम है।

02. भविष्यवाणी हेमेयोपाध्याय प्रगतिक्रित हेमेयोपाध्याय: अर्थात् भविष्यार्थ के लिए हेमेयोपाध्य और उपाध्यों का गुणवत्ताकारक आगम है।

8. निर्णय और संसार का निरुक्त आगम है-

यत्र निर्णय-संसारी निगराने तथा सकारात्मक
सर्वाधिकविनिरुक्त आगमोड़िस।

अर्थात् यहां पर निर्णय और संसार की संकरण ज्याक्या का जाए और जो सभी साधक तत्त्वों विविधमुक्त है, वह आगम है।

9. वाक्यों तत्त्वों का निरुक्त आगम है

01. आर्थिक विषय व वार्तालाप अर्थार्थ विषय व संवाद आगम:

10. वाक्यों तत्त्वों का गुणवत्ताकारक आगम

01. आर्थिक व प्रतिष्ठात्त्व के अनुसार यहां अन्वेषणार्थ आर्थिक विषय व संवाद आगम:

02. आर्थिक व प्रतिष्ठात्त्व के अनुसार यहां अन्वेषणार्थ आर्थिक विषय व संवाद आगम:

(अर्थात् जिससे मर्यादावृत्त मर्यादात्त्वात्मक अर्थ अवलोकन पदार्थ का वाक्यों तत्त्व संबंधित होता है, उसे)
03. मथ्यादियान वा यथावतिरिद्धप्रति परिवर्तन गमनते परिवर्तन से आगम। अर्थात् मथ्यादियान वा यथावतिरिद्ध प्रति परिवर्तन से पदार्थों का यथार्थ ज्ञान जिसको हारा होता है तव आगम है।

आगम वर्गीकरण

आगम को अलेक परम्पराएँ हैं, उनमें जैन आगम प्रमुख हैं। जैन साहित्य का प्राचीनतम एवं प्रमुख भाग आगम है। समस्यामें आगम के दो भेद प्राप्त होते हैं— 1. ज्ञानमान्य गणितिक और 2. ज्ञानमान्य गणितिक। ज्ञानमान्य में शृंखला (आगम) के दो भेद खिड़किए गए हैं— अंगभित्त और अंगवार्ता। इस प्रकार ज्ञानमान्य को स्पष्ट तक आगम के तीन वर्गीकरण हो जाते हैं— 1. पूर्व 2. अंगभित्त और 3. अंगवार्ता। आज अंगभित्त एवं अंगवार्ता उपलब्ध है, पूर्व उपलब्ध नहीं है।

वर्गीकरण के आधार—

1. ज्ञानमान्य गणितिक ने अंगभित्त और अंगवार्ता के भेद निरुपण में तीन कारण प्रस्तुत किए है—

शास्त्रीय विद्यामन्य और आपसा भूमिकावर्णनवादो वा।

अर्थात् जो 1. ज्ञानमान्य नो होता है 2. ज्ञानमान्य द्वारा प्रस्तुत किए जाने पर तीर्थकर द्वारा प्रतिपादित होता है 3. अंगभित्त एवं अंगवार्ता केवल कथा वही नहीं है। इसके द्विविधता जो 1. ज्ञानमान्य होता है 2. जो प्रस्तुत पूर्व विश्वास किया तीर्थकर द्वारा प्रतिपादित होता है 3. जो ठहर होता है, तात्कालिक या सामाजिक होता है, उस श्रृंखला का नाम अंग ब्राह्म है।

2. वक्ता के आधार पर ही आगमों के अंगभित्त एवं अंगवार्ता वो भेद करते हैं। तत्त्वाच्य पार्था (२.२०) में लिखित है— वक्तव्यविशेषादृश्विविधम्। स्वर्णसंगीतिक ने तीन प्रकार के वक्ता का निर्देश किया है—नयो वक्ता:—सर्वप्रथम तीर्थकर; इत्यदी श्रुतत्वद्रव्यम् आसातियसंगीति (स्वर्णसंगीति २.२०) अर्थात् २. सर्वत्र तीर्थकर २. श्रुतिकेतीती और ३. आपसी आचार्य। आसातिय साहित्यों के द्वारा विरितत ज्ञानवादि को अंगवार्ता कहते हैं।

3. तीर्थकरों द्वारा आर्य रूप में भाषित तथा गणवर्थों द्वारा प्रथम रूप से प्रविधि आगम अंगभित्त कहते हैं।

अंगभित्त ज्ञानमान्य नो और श्रुति के आचार्यों द्वारा विरित अंगवार्ता कहते हैं।

अंगभित्त अंगवार्ता: के नाम यो जाना अंगता है— 2. आचार ५
संदर्भ
01. संस्कृत भाषाकोष—संपादक पुष्करिणी मोक्षारसक, बहालवाह सोनीपत, हरियाणा। वि. म. 2046, प. 34
02. संस्कृत भाषाकोष, प. 5.
03. अमरकोश 3.3.19, प. 480, सुधावाक्य संपुन्त.
04. पणिनि, अध्यायार्थी, 2.3.23.
05. आद्यपञ्च विवृति, पाल्यमणि 29, प. 49.
06. अमरकोश 2.8.19, प. 296.
07. ईवार्तविभाषायी विवृति—विवृत्त्विभाषायी, अध्याय अधिनियम 59, प. 97.
08. सदयामल तन्त्र (साधनात्मक प्रथम खण्ड, प. 916 पर देखें पाद टिप्पणी).
09. हनुमतोह, पट्टल 4, प. 294.
10. ईवार्तप्रथमिकाविवृत्त्विभाषायी, अध्याय 2, प. 96.
11. भारतीय धर्म, बहादुर उपाख्यान, प. 631 पर उद्वृत.
12. बांतसूत्र 1.7 पर व्यासभाषा.
13. संस्कृत सूत्र 1.101
14. साहित्यकारिका, 8.
15. साहित्यकारिका 5 पर मातरकृति.
16. साहित्यकारिका 5 पर.
17. वायुसूत्र 1.1.17
18. निर्मलसर गाथा 8.
19. निर्माणसार बृहत 1.5.
20. अमरिकारिका, स्वाभाविक, पुनर्निर्माण, पुनर्निर्माण, प. 57.
21. पारसिकायात्मक प्रमूह 1.73, 226.
22. भाषी आराम, विज्ञानविद्या टैक्का 2.3.
23. अनुपागाय तौरिका 2.16.
24. साहित्यकारिका 5 पर मातरकृति.
25. कविताभाष्यकृति, सिद्धांतमणि 1.3, प. 40.
27. शतसिन्धु 3.19, साहित्यकारिका 1.12.
28. आद्यपञ्च, बीरसन्तान 3.8.
29. प्रभुभावनतल्लाळक 8.2, जैन तत्क भाषा, प. 35
30. रत्नकशाक श्रीयुक्ताराम स्वामी—५
31. अनुगोपनदास हरिभ्रमणारूप श्री ४.३८, प. २५
32. तत्संव महाशरीरकार्यामृत २०२
33. राजनार्तक ६.२३-२
34. भाष्यारुपरिण श्री न्र. प. २७
35. निवासमय माथा ५
36. भाष्यारुपरिण मृत १.३, प. १०
37. धर्मवल्ला ३.१२ २३-२३
38. धर्मवल्ला १८.२७४
39. जीतकशाक उपविवाहवर्तमान ७०६, श्री नदीमूर्ति, प. २५
40. रत्नकशाकांतिका ४.१, प. २६
41. आवश्यकता प्रशिक्षक, मल्लवज्ञन २२, प. ३५
42. नदीमूर्ति ४३
43. विशेषावशयकमन्त्र, गाथा ५५.२